ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। क्या नई बात समझाते हैं। बच्चे सुनते तो रहते हैं यह जो ऊपर में जाने वाले हैं जिसको ऐसट्रोनाट्स कहते हैं। अभी तुम अपने को आत्मा जानते हो। और तुम्हारा बाप आकर तुम आत्माओं को सिखलाते है। वह तो सिर्फ मून तक जाने की ट्राई(कोशिश) करते हैं। कितना खर्चा करते हैं, बहुत डर रहता है ऊपर जाने में। अभी तुम अपने ऊपर विचार करो तुम कहां के रहने वाले हो। वह तो चन्द्रमा तरफ जाते है। तुम तो सूर्य चांद से भी पार जाते हो एकदम मूलवतन में। वह लोग जो ऊपर में जाते हैं उन्हों को बहुत पैसे आदि मिलते है। ऊपर में चक्र लगाने को उनको लाखों रुपये की परचेज मिलती है। शरीर की जोखम उठाई जाती है। वह है सायंस का घमण्ड। तुम जानते हो हम आत्मायें अपने शान्तिधाम जाते हैं। तो तुम्हारा है सायलेन्स का घमण्ड। आत्मा ही सभी कुछ करती है। उनको भी आत्मा शरीर के साथ ऊपर में जाती है। बड़ा खौफनाक है। डरते भी हैं ऊपर से गिरे तो जान खत्म हो जावेगी। वे सभी हैं जिसमानी हुनर। तुमको बाप रूहानी हुनर सिखलाते हैं। इस हुनर के सीखने से तुमको कितनी बड़ी प्राईज मिलती है। 21 जन्म की प्राईज मिलती है नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। आजकल गवर्मेन्ट लाटरियां भी निकालती है ना। यह बाप तुमको क्या प्राईज देते हैं। और क्या सिखलाते हैं। तुमको बिल्कुल ऊपर ले जाते हैं। जहां तुम्हारा घर है। अभी तुमको याद आया ना कि हमारा घर कहां है। और राजधानी जो गवाई है वह कहां है। रावण ने छीन ली थी। अब फिर से हम अपने असली घर भी जाते हैं औ राजाई भी पाते हैं। मुक्तिधाम हमारा घर है। यह किसको भी पता नहीं है। अभी तुम बच्चों को सिखलाने लिये देखो बाप कहां से आते हैं। कितना दूर से आते हैं आत्मा भी राकेट है ना। वह कोशिश करते हैं ऊपर जाकर देखें चन्द्रमा में क्या है, स्टार में क्या है। तुम बच्चे जानते हो यह तो इस मण्डवे के बतियां हैं। जैसे मण्डवे में बिजलियां लगाते हैं ना, म्युजियम में भी बिजलीयों की चकमक करते हो ना। यह फिर है बेहद की दुनिया। इसमें यह सूर्य चान्द सितारे रोशनी देने वाले हैं। मनुष्य फिर समझते हैं सूर्य चन्द्रमा यह देवतायें हैं। परन्तु यह देवता तो है नहीं। अभी तुम समझते हो बाप कैसे आकर हमको मनुष्य से देवता बनाते हैं। यह ज्ञान सूर्य और ज्ञान चन्द्रमा और ज्ञान लक्ष्मी सितारे हैं। ज्ञान से ही तुम बच्चों की सदगति होती है। तुम कितना दूर जाते हो। बाप ने ही घर जाने का रास्ता बताया है। सिवाय बाप के और कोई भी वापिस घर जा नहीं सकते। बाप जब आकर के शिक्षा देते हैं तब तुम जाते हो। यह भी समझते हो हम आत्मा पवित्र बनेंगे तब ही अपने घर जा सकेंगे। फिर या तो योगबल से या मौचरे बल से पावन बनना है। बाप तो समझाते रहते हैं जितना बाप को याद करेंगे उतना ही तुम पावन बनेंगे। याद न करेंगे तो पतित ही रह जावेंगे। फिर बहुत सजायें खानी पड़ेंगी। और फिर पद भी भ्रष्ट हो जावेगा। बाप खुद बैठ तुमको समझाते हैं तुम ऐसे2 घर जा सकते हो। ब्रह्मण्ड क्या है सूक्ष्मवतन क्या है कुछ भी पता नहीं है। स्टुडन्टस पहले थोड़ेही कुछ जानते हैं। जब पढ़ने शुरू करते हैं तो फिर नालेज मिलती जाती है। नालेज भी कोई छोटी कोई कुछ बड़ी होती है। आई0सी0 एस0 का इम्तहान दिया फिर कहेंगे नालेजफुल। बस। इससे ऊंच नालेज और कोई नहीं। अब तुम यह कितनी ऊंच नालेज सीखते हो। बाप तुमको पवित्र बनने की युक्ति बताते हैं। बच्चों मामेकं याद करो तो तुम पतित से पावन बनेंगे। असल में तुम आत्मायें पावन थे। ऊपर अपने घर में रहने वाले थे। जब तुम सतयुग की जीवनमुक्ति में हो तो बाकी सभी मुक्ति में रहते हैं। मुक्ति और जीवनमुक्ति दोनों को हम शिवालय कह सकते हैं। मुक्ति में शिव बाबा भी रहते हैं। हम बच्चे आत्मायें भी रहते हैं तो वह सायंस के जिड्य क्या2 करते रहते हैं। वह है जिसमानी हाईएस्ट नालेज। यह फिर है हाईयेस्ट रूहानी नालेज। वह कहते हैं सूर्य चान्द के ऊपर जाकर रहेंगे। कितना माथा मारते हैं। बहादुरी दिखलाते हैं। इतने मलटी मिलीयन माईल्स ऊपर में जाते हैं। टाईम पूरा खा हुआ है। जब उनकी आशा पूरी न होगी और तुम्हारी आशा पूरी हो जावेगी। उनका घमण्ड जिसमानी घमण्ड तुम्हारा है रूहानी घमण्ड। माया की बहादुरी है कितनी दिखलाते हैं। मनुष्य कितने ताली बजाते हैं। बाधाईयां देते हैं। मिलता भी बहुत है। कर के 5-10करोड़

मिलेंगे। अभी तुम बच्चों को तो यह ज्ञानहै कि इन्हों को यह जो पैसे आदि मिलते हैं सभी खत्म हो जावेंगे। वाकी 7,8वर्ष सो सात आठ दिन ही समझो। आज क्या है कल क्या होगा। आज तुम नर्कवासी हो कल तुम स्वर्गवासी वन जावेंगे। टाईम कोई जास्ती नहीं लगता है। तो उन्हों की है जिसमानी ताकत, और तुम्हारी है रूहानी ताकत जो सिर्फ तुम्हीं जानते हो। वह जिसमानी ताकत से कहां तब जावेंगे। सूर्य चान्द तक पहुंचेंगे और लड़ाई शुरु हो जावेंगी। फिर सभी खत्म हो जावेंगे। उन्हों का हुनर यहां तक ही खत्म हो जाता है। वह है जिसमानी हाईयस्ट हुनर, तुम्हारा है हाईयस्ट रूहानी हुनर। तुम मूलवतन शांतिधाम में जाते हो उनका नाम ही है स्वीटहोम। वह लोग ऊपर में जाते हैं साथ में सभी कुछ ले जाते हैं। बहादुरी से जाते हैं। कितने मिल्टी मिलीयन्स माईल ऊपर में जाते हैं। और तुम अपना हिसाब करो तुम कितने माईल्स ऊपर में जाते हो। तुम कौन? आत्मायें। बाप कहते हैं मैं कितना माईल्स ऊपर में रहता हूं। गिनती कर सकेंगे? उन्हों के पास तो गिनती है, वतलाते हैं इतने माईल्स ऊपर में गये। फिर लौट आते हैं। वड़ी खवरदारी रखते हैं ऐसे उतरेंगे यह करेंगे। वहुत आवाज होता है। तुम्हारा क्या आवाज होगा। तुम कहां जाते हो फिर कैसे आते हो कोई को पता नहीं। तुमको क्या प्राईज मिलती है। यह भी तुम्हीं जानो। वन्डरफुल है ना। वावा की कमाल है। किसको पता नहीं। तुम तो कहेंगे यहनई वात थोड़ेही है। हर 5000वर्ष वाद। वह अपनी यह प्रेक्टीस करते रहेंगे। तुम इस सृष्टि रूपी ड्रामा के आदि मध्य अन्त डियुरेशन आदि को अच्छी रीत जानते हो। तो तुमको कितना नशारहना चाहिए। वावा हमको क्या सिखलाते हैं। वहुत ऊंचा पुरुषार्थ करते हैं फिर भी करेंगे। यह सभी वातें और कोई नहीं जानते। वाप है गुप्त। तुमको कितना राज समझाते हैं। तुमको कितनी नालेज देते हैं। उन लोगों को जानना है हद तक। तुम तो वेहद में जाते हो। वह चन्द्रमा तक जाते हैं। अभी वह तो वड़े2 वत्तियां हैं। और तो कुछ है नहीं। उनकी धरती नीचे वहुत छोटी देखने में आती है। तो उन्हों की है जिसमानी नालेज, और तुम्हारी है रूहानी नालेज। कितना फर्क है। तुम्हारी आत्मा कितनी छोटी है। परन्तु राकेट वहुत तीखा है। आत्मायें ऊपर ब्रह्मण्ड में रहते हैं फिर आते हैं पार्ट वजाने। यहां तुम्हारी आत्मा भृकुटि के वीच में रहते हैं। सितारे मिसल हैं। वाप जो तुमको विश्व का मालिक वनाते हैं वह भी सुप्रीम आत्मा है भला उनकी पूजा कैसे हो। भक्ति भी जरूर होनी ही है। वाप ने समझाया है आधा कल्प है ज्ञान से दिन। आधा कल्प है भक्ति से रात। अभी संगम युग पर तुम ज्ञान लेते हो। सतयुग में तो यह ज्ञान होता ही नहीं। इसलिये इनको पुरुषोत्तम संगम युग कहा जाता है। सभी को पुरुषोत्तम वनाते हैं। तुम्हारी आत्मा कितनी दूर2 जाती है। तुमको खुशी है ना। वह हुनर दिखाते हैं तो कहां से 10-20 हजार मिले। भल कितना भी मिले। परन्तु तुम समझते हो परन्तु कुछ भी साथ चलना नहीं है। अभी मरे कि मरे। सभी खत्म हो जाने वाले हैं। अभी तुमको कितनी वैल्युएवुल रत्न मिलते हैं। इनकी वैल्यु को कर न सके। लाख2 रुपया एक एक वरशन्स के का है। कितना समय से तुम सुनते आते हो। गीता में कितनी क्युएवुल नालेज है। यह एक ही गीता है जिसको मोस्ट वैल्युएवुल कहते हैं। सर्व शास्त्रमई शिरोमणि श्री मद्भगवद्गीता है। वह लोग भल पढ़ते रहते हैं परन्तु अर्थ थोड़ेही समझते हैं। गीता पढ़ने से क्या होगा। अभी वाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम पावन वनेंगे। भल वह गीता पढ़ते हैं परन्तु एक का भी वाप से योग नहीं। वाप को ही सर्वव्यापी कह देते। पावन भी वन नहीं सकते। अभी यह (ल०ना०) चित्र तुम्हारे सामने हैं, तुम जानते हो यह विश्व की मालिक हैं। है तो मनुष्य है ना। परन्तु इन्हों को देवता कहा जाता है क्योंकि दैवीगुण हैं। अभी वाप तुमको मनुष्य से देवता वनाते हैं। आत्माओं को पवित्र वन सभी को अपने घर जाना है। नई दुनिया में तो इतने मनुष्य होते ही नहीं। वाकी सभी आत्माओं को जाना पड़ेगा अपने घर। इस ज्ञान को सिवाय तुम वच्चों के और कोई समझ नहीं सकते। जो वाप तुमको समझाते हैं। मनुष्य तो वन्डर वन्डर कहते रहते हैं। तुमको वाप यह वन्डरफुल नालेज देते हैं जिससे तुम मनुष्य से देवता वहुत ऊंच वनते हो। तो ऐसी पढ़ाई पर इतना अटेन्शन भी देना चाहिए ना। यह भी समझते हैं जैसा2 जिस ने कल्प पहले अटेन्शन दिया है ऐसा देते रहेंगे। मालूम पड़ता रहता है। वाप सर्विस का समाचार सुनकर खुश भी

22-12-67

होती है। बाप को चिट्ठी ही नहीं लिखते हैं तो समझते हैं उनका बुधि योग कहांठिकर भितर तरफ लग गया है। देहअभिमान आया हुआ है। बाप को भूल गये हो। नहीं तो विचार करो लवमैरेज होती है तो उनका कितना आपस में प्यार रहता है। हां कोई2 की खाल भिटजाती है तो पिटाई भी मार भी डालते हैं। यह तुम्हारी है उनके साथ लवमैरेज। बाप आकर तुमको अपना परिचय देते हैं। तुम आपे ही परिचय नहीं पाते हो। बाप को आना पड़ता है। बाप आवेगा तब जब कि दुनिया पुरानी होगी। पुरानी दुनिया को नई बनाने जस संगम पर ही आवेंगे। बाप की डियुटी है नई दुनिया स्थापन करने की। तुमको स्वर्ग का मालिक बना देते हैं। तो ऐसे बाप के साथ कितना लव होना चाहिए। फिर क्यों कहते हो कि भूल जाते हैं। कितना ऊंच ते ऊंच बाप है। उनसे ऊंचा कोई होता ही नहीं। मनुष्य कितना मुक्ति के लिये उपाय करते हैं। कितनी झूठ ठगी लगी पड़ी है। महर्षि आदि का कितना नाम है' गवर्मेन्ट 10-20 एक जमीन दे देते हैं। ऐसा नहीं कि गवर्मेन्ट कोई रीलिजस है। कोई धर्म को मानते ही नहीं। कहा जाता है रीलिजन ईज माईट। क्रिश्चन लोग में माईट थी ना। सारे भारत को हप कर गये थे। अभी भारत में कोई माईट है नहीं। कितना झगड़ामारा मारी लगी पड़ी है। वही भारत क्या था। बाप कैसे, कहां आते हैं किसको भी कुछ पता भी नहीं है। तुम जानते हो भगवदेश में आते हैं। जहां मगर मच्छ होते हैं। मनुष्य ऐसे हैं जो सभी कुछ खा जावे। सबसे जास्ती वैष्णव भारत था। यह वैष्ण राज्य है ना। कहां यह महान पवित्र देवतायें, कहां आजकल तो देखो। क्या2 हप करते जाते हैं। जो आवे हप करते जावे। आदमखोर भी बन जाते हैं। भारत को क्या हालत हो गई है' अभी तुमको सारा राज समझा रहे हैं। ऊपर से लेकर नीचे तक पूरा ज्ञान देते हैं। सबसे पहले। तुम्हीं इस पृथ्वी पर होते हो। फिर कैसे मनुष्य बुधि कों पाते हैं। अभी तुम समझते हो 8वर्ष के अन्दर हाहाकार हो जावेगा। हाय हाय करते रहेंगे। स्वर्ग में देखो कितना सुख है' यह एमआबजेक्ट की निशानी देखो। यह सभी तुम बच्चों को धारणा भी करनी है। कितनी बड़ी पढ़ाई है। बाप कितना क्लीयर कर समझाते हैं। माला का राज भी समझाया है ऊपर में फूल है शिवबाबा। फिरे है ऐसे प्रवृति मार्ग है ना। निवृतिमार्ग वालों को माला फेरने का हुकुम ही नहीं। यह है ही देवताओं की माला। बाप ने तुमको समझाया है इन्होने कैसे राज्य लिया। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। कोई2 है जो वेधर्म हो किसको समझावे आओ तो हम आप को ऐसी बात सुनाते हैं जो और कोई बता नहीं सकता है। सिवाय शिव बाबा के और कोई बता न सके। इन्हों को यह राजयोग किसने सिखाया। बहुत रसीला बैठ समझाना चाहिए। यह 84 जन्म कैसे लेते हैं। इन्हों का पिछाड़ी का जन्म कौन सा है। देवता सो क्षत्री। वैश्य शुद्र। बाप कितनी सहज नालेज देते हैं। और पवित्र भी बनना है' तब ही ऊंच पद पावेंगे। सारे विश्व पर शान्ति स्थापन करने वाले तुम हो। तुमको बाप राज भाग देते हैं। दाता है ना। वह कुछ लेता नहीं हैं। तुम्हारी पढ़ाई की यह है पराईज। ऐसी प्राईज तो और कोई दे न सके। तो ऐसे बाप को प्यार से क्यों नहीं याद करते हो। लौकिक बाप को तो सारा दिन याद करते हो। पारलौकिक को क्यों नहीं याद करते हो। बाप ने बताया है युध का मैदान है। टाईम लगता है। पावन बनने में इतना ही समय लगता है जब तक लड़ाई पूरी हो। ऐसे नहीं जो शुरू से आये हैं वह पूरे पावन होंगे। बाप समझाते हैं माया की लड़ाई बड़ी जोर से लगती है। अच्छे2 को माया जीत लेती है। इतनी तो बलवान है। जो गिरते हैं वह फिर मुरली भी कहां से सुने। सेन्टर में तो आते ही नहीं तो उनको कैसे पता पड़े। माया एकदम बर्थ नाट अपनी बना देती है। मुरली जब पढ़े तब सुजाग हो। गंदे काम में लग जाते हैं। कोई सेन्सीबुलबच्चा हो जो उनको समझावे तुम ने माया से कैसे हार खाई है। बाबा तुमको क्या बनाते थे फिर तुम कहां जा रहे हो। देखते हैं उनको माया खा रही है तो बच्चा लेने की कोशिश करनी चाहिए। कहां माया सारा हप न कर लेवे। फिर से सुजाग हो जावे। यह तो जानते हैं फिर ऊंच पद नहीं पावेंगे। गाया जाता है सद्गुरु के निन्दा करने वाले ठौर न पावे। न गिरे तो ठौर पा सकते हैं। बच्चे जानते हैं कैसे गिरते हैं। उनके साथी भी जानते हैं। किसको गिरा हुआ देखते हैं तो रहम आना

चाहिए। इनको माया से बचा लेवें। बाप कितना ऊंच बनाते हैं आये हैं। इस समय सभी माया रावण के पेट में पड़े हैं। बाप निकालने आये हैं। कितना समय लगता है निकालने में। जैसे कोई डूबता है तो उनको बचाना होता है ना। हमको सिखलाने वाला डूब पड़ा है। माया ने पकड़ लिया है ड्रामा प्लेन अनुसार। खुश होकर उनका साथी नहीं बनना चाहिए। कोशिश करनी चाहिए बचाने की। कितना भी डिसकस कर माया के वस हो जाये फिर तुम रहम दिल बाप के बच्चे हो तो रहम दिल बन माया से बचा लेना चाहिए। यह भी समझाया बाप कितना ऊंच तुम बच्चों को ले जाते हैं। तुम्हारा घर कितना माईल ऊपर में है। बता सकेंगे? वह तो हिसाब निकालते हैं ना इतने मिलियन माई एक घंटे में जाते हैं। अभी वह तो तुम्हारे काम की चीज़ नहीं। तुम कितना ऊपर जाते हो। अनगिनत। तुम्हारा सभी कुछ अनगिनत है। धन भी बाबा अनगिनत देते हैं। बच्चों को पुरुषार्थ करना चाहिए। ठंढा न बनना चाहिए। समझते भी हो बाबा हमको बहुत ऊंच ले जाते हैं। यहां खुश होते हैं बाहर जाने से फिर एकदम गुम हो जाते हैं। यहां तो तुमको कोई फर्ज आदि भी नहीं। बाहर में रहने से तुम इतनी धारणा नहीं कर सकते हो। बुद्धि घर-बार तरफ भटकती रहेगी। घर भी खिटपिट चलती है। कोई युगल आते हैं। अगर एक आते हैं दूसरा नहीं आते हैं तो हंगामा हो जाता है। यहां तुम सभी खिटपिट से दूर बैठे हो। तो अच्छी रीत धारणा करनी चाहिए। खुशी से आना चाहिए। कई तो यहां जैसे लाचार से आते हैं। नम्बरवार तो होते ही हैं। तो यहां तुमको बहुत अच्छा टाईम है। बाहर में तो बच्चों की हंगामा, नौकरी का हंगामा। उन विचारों में ही बाप को भूल जाते हैं। बाप को तो नहीं भूलो ना। कितना ऊंच तुमको पढ़ाते हैं। तुम जिससे 21 जन्म लिये प्रारब्ध पाते हो। वह क्या करते हैं, कौन उनको पढ़ाते हैं। तुमको कौन पढ़ाते हैं। कितना फर्क है। उस किनारे है रावण राज्य इस किनारे है राम राज्य। तुमको समझाया जाता है कलियुग को भी याद न करो। तुम तो अभी संगम युग पर बैठे हो। तो नई दुनिया को ही याद करो। यह है वेश्यालय। जैसे किकुंआ है। कोई गिरता है तो टुकड़ा2 हो जाता है। इसलिये इनको रौरव नर्क कहा जाता है। नाम देखो कितना कड़ा है। नांग वलारं विच्छू टिण्डन रहते हैं। शास्त्रों में लिखा है शंकर पार्वती पर फिदा हुआ। वीर्य गिरा उनसे विच्छू टिण्डण पैदा हुये। अभी शंकर आदि की तो बात ही नहीं। बाप समझाते हैं इस समय सभी विच्छू टिन्डण ही पैदा होते हैं जो डंसते मारते रहते हैं। शास्त्रों में फिर चढ़ाई लिख दी है। सूक्ष्मवतन में फिर यह बातें कैसे हो सकती है। शंकर फिदा हुआ सूक्ष्मवतन में। विच्छु अिन्डण फिर यहां निकले। कहते हैं शास्त्र व्यास भगवान ने लिखी है। जब व्यास भगवान ही ऐसी2 बातें बनाते हैं तो मनुष्य क्या नहीं बनाते होंगे। बाप कहते हैं तुम बच्चे बहुत बहुत भाग्यशाली हो। आज तुम साहबजादे हो कल शाहजादे बनने वाले हो। आज साहबजादे नर्कवासी, कल शाहजादे स्वर्गवासी। सारे विश्व के मालिक होंगे। तो ऐसे बाप को कितना अन्दर में याद करना चाहिए। विचार सागर मंथन कर पाइन्ट्स आदि निकालनी है। याद करनी है। और दूसरों को भी समझाना है। गुल गुल भी बनना है। बाप कहते हैं कांटों से फर्स्ट क्लास फूल बनो। फूलों में भी अनेक प्रकार के होते हैं तो कांटों में भी अनेक प्रकार के होते हैं। बाप खुद बच्चों की अवस्था देखते हैं। तो समझते हैं यह बिचारे क्या बनेंगे। अपनी अवस्था को हरेक जान सकते हैं। हम बाबा क्या सेवा करते हैं। बाबा को प्यार करते हैं? शिव बाबा कहते हैं हे रूहानी बच्चों मुझ बाप को मामेकं याद करो। देहधारी को याद न करो। इन द्वारा बाप समझाते हैं। तो यह भी याद आता है। यह शरीर न होता तो फिर शिव बाबा होता क्या। रथ की बलिहारी गाई जाती है। रथ भी पढ़ते हैं ना। स्कूल में मास्टर का रिगार्ड भी रखेंगे ना। बड़े टीचर का छोटे टीचर रिगार्ड तो रखेंगे ना। कई तो यह भी समझते नहीं हैं। यह है दुःखधाम। वह है सुखधाम। वहां लाईफ बड़ी और पवित्र रहती है। यहां लाईफ कम और अपवित्र है। पद का भी कितना फर्क पड़ जाता है। कहां राव और कहां रंक। वह पावन यह पतित। तो पावन बनना चाहिए ना। कोई भी विचार सागर मंथन नहीं करते हैं। नहीं तो बच्चों को विचार सागर मंथन करना चाहिए। अच्छा बच्चों को गुडमोर्निंग।